कहानी

'ऑब्जेक्टिव डिस्टेन्स'

– अभिषेक गोस्वामी

अपने पेशे में तेजी से ऊंचाइयों पर पहुंच जाने की महत्त्वाकांक्षा किसे नहीं होती।

गौरव एस० अपने आगाज से ही राज्य में नंबर एक के स्थान पर विराजमान दैनिक अखबार में वरिष्ठ रिपोर्टर के रूप में काम करता था। सैंतीस–अड़तीस की उम्र में ही यह वरिष्ठता उसे अपनी भाषायी दक्षता, कार्मिक प्रतिस्पर्धा से उपजे सामाजिक सरोकार, समय की प्रतिबद्धता, चेहरे पर हमेशा बनी रहने वाली मुस्कुराहट और कॉफी हाउस, प्रैस क्लब इत्यादि में बिलावजह की नियमित मौजूदगियों की वजह से हासिल हुई थी। ईश्वर और संयुक्त परिवार प्रणाली में गहन आस्था के बावजूद डार्विन के 'ऑरिजिन ऑफ स्पेशीज' और मार्क्स के द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद जैसे विषयों पर उसकी बेहतरीन पकड़ अपने कनिष्ठों के लिए ज्ञान, वैज्ञानिक दृष्टिकोण और परंपरागत जीवन शैली के साथ सकारात्मक जीवन निर्वहन के बीच बेहतरीन संतुलन की अनुकरणीय मिसाल थी।

रेखांकन: प्रियंवद

पत्रकारिता जगत में लगभग दस बारह साल की जी तोड़ मेहनत से हासिल सम्मानजनक नौकरी के चलते गौरव एस. के जीवन में अब हर प्रकार की स्थिर मजबूती आ गयी थी– जिसका अंदाजा इस बात से लगाया जा सकता है कि उसने अपनी पत्नी की नौकरी छुड़ा दी थी। अब वह उसके सुझाव पर बच्चों के बेहतर भविष्य के लिए सिर्फ उनके लालन–पालन पर ध्यान केन्द्रित कर रही थी। गौरव की पत्नी प्रियदर्शिनी उनके दोमंजिला पुश्तैनी घर जो उसके पिता ने पाई–पाई जोड़कर बनवाया था, उसके ऐन सामने वाले दो सौ फुट चौड़े हाइवे के पार एक निजी क्रेच कम प्ले स्कूल में नौकरी किया करती थी। जहां संपन्न परिवारों के बच्चे कक्षा एक में औपचारिक विद्यालयों में जाने से पहले ही वहाँ के संस्कार ग्रहण करने आया करते थे। उनका छोटा बेटा जो अभी पौने तीन साल का हुआ था। इसी साल शहर के एक नामी निजी विद्यालय में प्रवेश लेने जा रहा था। उनकी बड़ी बेटी भी उसी स्कूल में तीसरी कक्षा में आ गई थी। जो अब दस साल की हो गयी थी और उम्र के लिहाज से बहुत आगे जाकर एकदम गोल–गोल रोटियां बनाने लगी थी।

गौरव को अपने पेशेवर जीवन में अब एक रचनात्मक किन्तु क्वान्टम जंप की जरूरत महसूस होने लगी थी। कैरियर की शुरुआत में जब गौरव सांस्कृतिक संवाददाता के तौर पर काम करता था। तो तस्वीरकशी यानि कि छायाचित्रकारी की कला उसे बहुत प्रभावित करती थी और वह इस शौक में हाथ आजमाना चाहता था। मगर तब महंगे कैमरे खरीदने की क्षमता नहीं थी। तो उसे मन मसोस कर रह जाना पड़ता था। सालों तक थोड़ा–थोड़ा पैसा बचाकर अब ऐसी स्थिति आ गयी थी कि वह तस्वीरकशी के दबे हुये शौक को पूरा कर सके सो ऑनलाइन ऑफर में एक डी एस एल आर कैमरा खरीद लिया था। अमूमन ऐसे कैमरों के साथ कंपनियाँ एक ही लेंस देती थी। मगर चूंकि यह सीमित समय के लिए दिया गया एक ऑफर था तो गौरव एस० को उसी कीमत में एक के बजाय दो लेंस मिल गए थे। पहला लेंस 18–55 एम एम का था और दूसरा 35–150 एम.एम. का। लंबाई–चौड़ाई, निकटता और दूरी के हिसाब से दृश्यों को अपनी सुविधानुसार कैद कर लेने की क्षमता इन लेंसों में होती है। एक जमाना था जब सिर्फ रील वाले कैमरा ही आते थे। जिनमें रील डालनी पड़ती थी और जिनसे सिर्फ अधिकतम 36 तस्वीरें ही ली जा सकती थी। किस दृश्य को कैद करें किसे न करें? इस चुनाव में एक बड़े भयंकर बौद्धिक संकट का सामना करना पड़ता था। लैब में फोटो बिगड़ जाने का खतरा

अलग। डी.एस.एल.आर. ने तो जैसे क्रांति ही ला दी। चाहे जितनी मर्जी फोटो खींचो... खचाक खचाक खचाक। सौ खींचो तो कम से कम एक मास्टरपीस तो पक्का ही समझो। कोई संकट नहीं।

बहरहाल, हुआ यूं कि कुछ दिनों में ही गौरव का हाथ कैमरे पर बेहतरीन चलने लगा और ऐसा अच्छा खासा चलने लगा कि एक महीने के भीतर ही खबरों और रिपोर्टों के साथ अखबार में उस के द्वारा खींची गयी तस्वीरें प्रमुखता से उसके श्रेय के साथ छपने लगी। उसकी तस्वीरें अब शब्दों की जगह लेने लगी। बरसों से दबा हुआ तस्वीरकशी का शौक परवान चढ़ रहा था और अब गौरव अपने आप को फोटो जर्नलिस्ट के रूप में देखने लगा था। अब सिर्फ और सिर्फ फोटो जर्नलिस्ट के रूप में विख्यात हो जाने की धुन गौरव के सिर पर ऐसी सवार रहने लगी थी कि उसका ज्यादातर समय कंप्यूटर के सामने बैठे फोटोग्राफी से संबन्धित वेबसाइट को तलाशते गुजरता या फिर अपनी खींची हुई तस्वीरों को एडिट करते या पुराने शहर में गली–गली जाकर तस्वीरकशी करने में। उसके शब्द अब खोने लगे थे और फोटो जर्नलिस्ट हो जाने की महत्त्वाकांक्षा सर उठाकर नाच रही थी।

उन्हीं दिनों एक खतरनाक अदृश्य विषाणु कोरोना चीन से निकल कर पूरी दुनिया में तेजी से फैल रहा था और लोगों को संक्रमित कर मौत की नींद सुला रहा था। चीन के बाद इटली, स्पेन, इंग्लैंड, जर्मनी, ईरान और अमेरिका जैसे शक्तिशाली देश बुरी तरह से एक–एक कर के इस विषाणु की चपेट में आ चुके थे और वहां मरने और संक्रमित होने वाले लोगों के आंकड़ों में डरा देने वाला इजाफा थमने के नाम नहीं ले रहा था। विज्ञान और धर्म, अर्थनीति और राजनीति किसी के भी पास इस विषाणु का कोई इलाज नहीं था। सिवाय इस बचाव के कि जो जहां है वहीं थम जाए और पहले खुद को और फिर अपनी वजह से दूसरों को संक्रमित होने से बचा ले। विश्व स्वास्थ्य संगठन ने इसे वैश्विक महामारी घोषित कर दिया था। देशव्यापी लॉकडाउन को इससे बचने के एक कारगर तरीके के तौर पर सुझाया था। दुनिया के अधिकतर संक्रमित देशों ने खतरे को भांपकर विश्व स्वास्थ्य संगठन के इस सुझाव को माना था और अपने अपने देशों में देशव्यापी लॉकडाउन की घोषणा कर दी थी। भारत में भी एहतियातन लॉकडाउन घोषित कर दिया गया था। सभी आवश्यक सेवाओं जैसे चिकित्सा इत्यादि को छोडकर स्कूल, कॉलेज, उद्योग धंधे जहां लोगों के एक दूसरे से सटकर बैठने खड़े होने की संभावना थी उन प्रतिष्ठानों को पूरी तरह से बंद रखने के सख्त सरकारी आदेश जारी कर दिये गए थे। प्रधानमंत्री के 'जान है तो जहान है' वाले नारे के साथ सभी सरकारी गैर सरकारी संस्थानों में काम करने वाले लोगों को घर से ही काम करने की इजाजत दे दी गयी थी।

गौरव एस. चूंकि अपने प्रतिष्ठान में वरिष्ठ संवाददाता था। अतः सुझावात्मक आदेश के तहत उसे भी अपने घर से ही काम करने की सहूलियत प्राप्त हुई थी। कहा गया था कि बहुत जरूरी हुआ तो उसको दफ्तर बुला लिया जाएगा। तब तक खुद को और अपने परिवार को महफूज रखते हुये वह घर और उसके आस–पास के जीवन पर ही रिपोर्टिंग करे। वह चाहे तो अपने कैमरे से खींची हुई तस्वीरें भी भेज सकते हैं सिर्फ। दफ्तर जानता था कि तस्वीरकशी आजकल गौरव एस. का प्रिय शगल था। यह लॉकडाउन लंबा चलने वाला था अतः लॉकडाउन के दौरान अखबार के मुख पृष्ठ पर आज की तस्वीर श्रृंखला शुरू करने का सुझाव भी संपादक द्वारा दिया गया। संकट के इस दौर में सुझावात्मक आदेश की बोल्ड फॉन्ट में लिखी गयी आखिरी पंक्ति गौरव के लिए भी राहत देने वाली थी।

अब क्या था गौरव नित्य प्रतिदिन हाइवे पर अपने पिताजी द्वारा बनवाए गए दोमंजिला घर की छत पर कैमरा और उसके दोनों लेंस लेकर चला जाता। तीन सौ साठ डिग्री पर घूम–घूम कर घंटों कैमरे से खच–खच करता रहता और शाम चार बजे की डेडलाइन पर अपने संपादक को आज की तस्वीर श्रृंखला के लिए अपने हिसाब से बेहतर तस्वीरें चुनकर मेल कर देता।

तीस–एक दिनों की डेडलाइन तो पंखों, चिड़ियों, सुनसान सड़कों, रेल की सूनी पटरियों, नीले खुले आसमान, चाँद–तारे, सूर्योदय–सूर्यास्त, घरों में सभ्य तरीके से सरकार का साथ देते हुये योगासन करते लोग और अपने जूतों के नीचे से उगते हुये बिरवे की तस्वीरों में निपट गए। मगर अब दफ्तर को कुछ नया चाहिए था। संपादक जी ने पिछले मेल में यह भी लिखा था कि सभी कार्मिकों को अगले महीने की तनख्वाह में से तीस प्रतिशत राशि देशहित में पी.एम. केयर फंड में जमा करानी होगी। देशहित में इस तरह की और भी कई

चुनौतियां आगे आने वाली थी। आपदा को अवसर में बदल देने पर भी जोर दिया जा रहा था।

लॉकडाउन के चालीसवें–इकतालीसवें दिन जब गौरव हाइवे पर स्थित अपने दोमंजिला घर की छत से नीचे की तरफ दो सौ फीट सड़क की ओर मुंह किए अपने कैमरे में आँख गड़ाए सुनसान सड़क पर भूख से बेचैन कुत्ते की मुद्राओं को कैद करने का रचनात्मक प्रयास कर रहा था– कि तभी फ्रेम में बीचोंबीच एक व्यक्ति आ कर खड़ा हो गया। वह कुछ देर ठहर, पीछे की तरफ मुड़कर देखने लगा जैसे किसी का इंतजार कर रहा हो। फ्रेम में इस व्यक्ति की अनचाही मौजूदगी की वजह से गौरव अब उस सुनसान सड़क पर भूख से बेचैन कुत्ते की मुद्राओं को ठीक से नहीं देख पा रहा था। उस कुत्ते की तस्वीर को कैमरे में कैद करने के लिए बार–बार उसे अपने एंगल बदलने पड़ रहे थे। गौरव उस व्यक्ति के फ्रेम से बाहर जाने का इंतजार करने लगा। इंतजार के वक्फे में कैमरे के मॉनिटर में अब तक खींची गयी कुत्ते की तस्वीरों में से आज की तस्वीर छांटने लगा। उन तस्वीरों में से एक तस्वीर पर अनायास ही उसकी नजर ठहर गयी जो बहुत देर तक ठहरी रही। यह वह अनचाही तस्वीर थी जो उस व्यक्ति के अचानक फ्रेम में आ जाने पर अनायास ही कैद हो गई थी। जिसमें सड़क के एक किनारे कुत्ता भूख से बेचैन दिखाई पड़ रहा था और सड़क के दूसरी ओर अपने सिर पर बोरा लिए हुये किसी का इंतजार करता हुआ वह व्यक्ति। उसे संभवतः आज की तस्वीर मिल गयी थी। इस तस्वीर में अनेक नए अर्थ छुपे हुये थे और अब यह तस्वीर उसे पूरे दृश्य को नए तरह से देखने को प्रेरित कर रही थी।

इस बीच वह व्यक्ति अपने सिर से बोरा उतारकर वहीं सड़क पर बैठ गया और बीड़ी जलाकर पीने लगा। बैठने पर उसके नंगे, छिले हुये पैर साफ–साफ दिखाई दे रहे थे। उम्र लगभग पचास–बावन, काला चेहरा, चेहरे पर सफेद छितरी हुयी दाढ़ी। यह संभवतः कोई मजदूर था जो अपने परिवार और अपने गांव के साथियों के साथ पैदल ही घर लौट रहा था।

गौरव ने क्लिक करके ऊंची आवाज में पूछा– कहां से आ रहे हो भैया? क्या करते हो?

उस व्यक्ति ने बीड़ी का धुआँ उड़ाते जवाब में कहा– मजदूर हैं साहब। पूना से आ रहे हैं, पन्ना जाएंगे। गौरव के दोमंजिला घर और हाइवे के बीच सर्विस लेन को पार करते हुये उसकी आवाज गौरव तक साफ–साफ पहुंच पा रही थी।

गौरव ने पूछा– पैदल–पैदल? इतना दूर? पता है कितना किलोमीटर बचा है अब यहां से?

मजदूर बोला– मालूम है साहब। चार सौ के आस–पास बचा है। घर नहीं जाएंगे तो भूख से मर जाएंगे। पैदल जाने के अलावा और कर भी क्या सकते हैं? मालिक बोलते हैं अगले महीने की मजूरी नहीं दे पाएंगे। यहाँ भूखों मरने से तो अच्छा है घर जाकर मरें।

अच्छा और कौन कौन है साथ? गौरव ने सच्ची चिंता जताते हुये पूछा।

लुगाई है। तीन लड़कियां हैं और गांव के साथी। कुल मिलाकर सोलह लोग हैं। सब आ रहे हैं पीछे धीरे–धीरे। कोई दिक्कत नहीं है। पहुंच जाएंगे साहब हफ्ते भर में। घर ही तो जाना है। आप जैसे लोगों का सहारा है तो फिर चिंता किस बात की?

गौरव के भीतर शायद कुछ हिला और उसने कुछ सोचकर कहा– कि पानी चाहिए तो यहां नीचे इस दुकान के बाहर वाटर कूलर लगा है पी लो और रास्ते के लिए भर भी लो। ठंडा है पानी। साफ सुथरा। हमने आज ही भरा है। गौरव के पिता ने ग्राउंड फ्लोर पर चार दुकानें बनवा रखी थीं। उनमें से दो ख्यातनाम ब्रांडेड कंपनियों और दो किसी प्रॉपर्टी डीलर को किराए पर दे रखी थी। जो इन दिनों बंद थी। उन्हीं में से कोने वाले एक शोरूम के बाहर वॉटर कूलर लगा था।

गौरव का इतना कहना था कि उस मजदूर ने सड़क पर अपनी बीड़ी बुझाई और कुछ सोचकर अपने बोरे में से दो लीटर वाली हल्की सी पिचकी हुई प्लास्टिक की बोतल निकाली और वाटर कूलर से पानी भरने लगा। उस बोतल पर लगा प्लास्टिक का स्टीकर लगभग उतर गया था। मगर ढक्कन पर ख्यातनाम शीतल पेय पदार्थ की कंपनी का लोगो सही सलामत अपने मूल नीले रंग में चमक रहा था। जब वह मजदूर वॉटर कूलर से पानी भर रहा था तो इस बीच गौरव ने कैमरे का लेंस बदल लिया था और पानी पीते हुये उस व्यक्ति की तस्वीरें खींच रहा था। खच–खच–खच–खच, खचाक–खचाक–खचाक की आवाज लगातार आ रही थी। ऐसी आवाज तब आती है जब कैमरे को कंटिन्यूअस मल्टीपल शॉट मोड पर रखा जाता है।

गौरव को फ्रेम में उस मजदूर के हाथ दिख रहे थे जिस पर का गोदना गुदा था वहीं उस के नीचे नीले–हरे से रंग में बिसन–पन्ना लिखा था। यह उस मजदूर का नाम था। वह पन्ना का रहने वाला था। जब तक बिसन ने वॉटर कूलर से पानी भरा उसका परिवार जिसमें तीन लड़कियां और उसकी पत्नी थी वे भी उसके पीछे पीछे चलकर यहाँ तक पहुंच गयी थीं।

बिसन की पत्नी का पेट निकला हुआ था। वह गर्भवती थी। लड़के की आस किसे नहीं होती। बिसन की सबसे बड़ी बेटी ने सबसे छोटी वाली बेटी को अपनी गोद में उठा रखा था। मंझली के एक हाथ में चप्पलें थी (जो संभवतः चलने में असुविधा के चलते बिसन ने उतार कर अपनी बेटी के हाथ में थमा दी होगी।) मंझली के दूसरे हाथ में प्लास्टिक की एक पारदर्शी थैली थी जिसके भीतर किसी पुराने अखबार में लिपटी हुई रोटियां रखी थीं। गौरव की नजर कैमरे के लेंस के जरिये यह सब कुछ फाइन डीटेल के साथ साफ–साफ देख पा रही थी।

बिसन का परिवार जो पीछे आ रहा था उनके आते ही बिसन ने कहा– 'पानी वानी पी लो फिर चलते हैं। अभी बारह बजे हैं। दिन ही दिन में जितना चल सकते हैं। चल लेते हैं।'

बिसन की बच्चियों और उसकी पत्नी ने वॉटर कूलर से पानी पिया। मुंह धोया। और फिर सब साथ होकर आगे चल दिये। जहां तक वे जाते हुये दिखाई दिये गौरव एस० का कैमरा कंटिन्यूअस मल्टीपल शॉट मोड में लगातार खच–खच–खच–खच, खचाक–खचाक–खचाक. खच–खच बिना रुके चलता रहा।

मजदूर बिसन और उसके परिवार के जाने के बाद गौरव भी छत से उतरकर नीचे अपने कमरे में आ गया। खींची गयी तसवीरों में से एक तस्वीर छांट, उसे एडिट करके अपने संपादक को मेल करने के लिए अपने डेस्कटॉप के सामने बैठ गया। आज की जो तस्वीर भेजी जानी थी मन में तो उसने पहले ही चुन ली थी इसलिए बिना ज्यादा समय लगाए जल्दी से मेल में अटैच कर दी। यह वही तस्वीर थी जिसमें सड़क के एक किनारे भूख से बेचैन कुत्ता है और दूसरी ओर वह मजदूर जो सिर पर बोरा लिए सड़क पर खड़ा है किसी के इंतजार में। गौरव ने मेलबॉक्स में प्लीज फाइंड एटेचमेंट फॉर 'आज की तस्वीर' टाइप कर दिया था अब सिर्फ सेंड पर क्लिक करना बाकी रह गया था। मेल ड्राफ्ट मेल में पड़ा था। किसी भी मेल को भेजने से पहले सेकंड थॉट देने के लिहाज से ऐसा वह अक्सर किया करता था। डेडलाइन चार बजे की थी। अभी उसके पास समय था।

इन दिनों संपर्क की दुनिया का सारा कारोबार इंटरनेट और सोशल मीडिया की आभासी दुनिया में सिमट रहा था। डेडलाइन से पहले प्रचुर मात्रा में समय की उपलब्धता को देखते हुये इस बीच गौरव ने अपना स्टेटस अपडेट करने के लिए फेसबुक प्रोफाइल खोल लिया। उसके मित्रों की संख्या पाँच हजार हो चुकी थी। कई दिनों से वह अनचाहे और बेकार लोगों को अनफ्रेंड करने की सोच रहा था। ताकि सिर्फ काम के मित्रों को रख सके और नए मित्रता निवेदनों को स्वीकार कर सके। किन्तु समय नहीं मिल रहा था। उसे लगा आज समय है। अतः वह अपनी मित्रता सूची में एक एक अनचाहे लोगों के प्रोफाइल की ठीक से छानबीन करते हुये नए और सिर्फ काम के मित्रों के लिए जगह खाली करने लगा।

उन अनचाहे लोगों की सूची में उसका एक पुराना फोटोग्राफर मित्र भी था। जिससे आजकल उसका मनमुटाव हो गया था और उसकी बोलचाल बंद थी। गौरव ने उस फोटोग्राफर मित्र को अमित्र करने से पहले उसकी दीवार के अंतिम दर्शन कर लेने चाहे। वहाँ उस फोटोग्राफर मित्र की दीवार पर नवोदित फोटो जर्नलिस्टों के लिए एक अंतर्राष्ट्रीय फोटो कॉन्टेस्ट के इश्तिहार का एक लिंक चस्पा था। गौरव को यह कुछ दिलचस्प लगा। लिंक को क्लिक करके वेबसाइट और गूगल पर खोज कर देखा तो उसे सारा मामला विश्वसनीय ही लगा।

महान छायाचित्रकार ब्रेसां की याद में आयोजित किए जा रहे इस कॉन्टेस्ट में दुनिया के किसी भी कोने से कोई भी नवोदित फोटो जर्नलिस्ट इस कॉन्टेस्ट के लिए तस्वीरें भेज सकता था। कॉन्टेस्ट की थीम थी 'लाइफ इन द टाइम्स ऑफ कोरोना'। प्रविष्टि मेल के द्वारा भेजी जा सकती थी। भारतीय मुद्रा में पहला पुरस्कार 50000, दूसरा 25000, और तीसरा 10000 रुपये का था। उसने गौर से देखा। इस कॉन्टेस्ट की घोषणा आज ही हुई थी। आज ही इसके आवेदन की अंतिम तिथि थी और आज ही भारतीय मानक समय के अनुसार शाम छह बजे इसके

परिणाम भी घोषित किए जाने थे। विंडो सिर्फ चार घंटे के लिए खुली थी। दो घंटे गुजर चुके थे दो बाकी थे। यह अपने आप में एक अलग ही तरह का कॉन्टेस्ट था। यह एक ऐसा समय था जब कला जगत को भी बहुत कुछ रचनात्मक नहीं सूझ नहीं रहा था इन दिनों। अतः छटपटाहट में ऐसे अनेक ऑनलाइन नवाचार सामने आ रहे थे। ध्यान देने योग्य बात तो यह थी कि दुनिया के नामी गिरामी फोटोग्राफर भी इस कॉन्टेस्ट के निर्णायक मण्डल में थे।

चंद घंटों में मिल सकने वाली इस संभावी अंतर्राष्ट्रीय ख्याति और अगले महीने कटने वाली तनख्वाह के बरक्स इनाम के रूप में मिलने वाली राशि के लिहाज से गौरव को यह मौका बेहतरीन लगा। उसने बहुत ही उत्साह के साथ सभी अपेक्षित औपचारिकताओं को संतुष्ट करते हुये अपनी प्रविष्टि भेज दी। प्रविष्टि के लिए जिस तस्वीर को गौरव ने चुना था यह वही तस्वीर थी जिसे अखबार में आज की तस्वीर श्रृंखला में छपने के लिए उसने मेल में अटैच की थी। वही तस्वीर– जिसमें सुनसान सड़क के एक ओर एक कुत्ता भूख से बेचैन होकर कसमसा रहा था तो, दूसरी तरफ पन्ना का रहने वाला बिसन अपने सिर पर बोरा रखे सड़क के एक किनारे अपने परिवार वालों के इंतजार में खड़ा था।

अखबार के संपादक को भेजने के लिए उसके पास आज तस्वीरों की कोई कमी नहीं थी। इसलिए कुत्ते के साथ वाली मजदूर की इस तस्वीर को अटैचमेंट से हटाकर अखबार को आज की तस्वीर श्रृंखला में छपने के लिए गौरव ने सिर्फ कुत्ते वाली अन्य तस्वीर अटैच कर दी और भेज भी दी।

तब तक दोपहर का डेढ़ बज गया था। उसकी पत्नी और बेटी ने मिलकर लंच तैयार कर लिया था। सुबह भारी नाश्ता किया था तो लंच में आज सिर्फ पाव भाजी बनी थी। पूरे परिवार ने एक साथ खाना खाया। लॉकडाउन के दिनों में दोपहर में दो से तीन घंटे सोने को मिल जाया करते थे। खाना खाने के बाद गौरव अपने बेडरूम में बीवी बच्चों के साथ मस्ती में टी.वी. पर हिन्दी में डब्ड अल्लू अर्जुन की दक्षिण भारतीय फिल्म देखते–देखते कब सो गया पता ही नहीं चला।

कहते हैं कि तकदीर भी उन्हीं का साथ देती है – जो सिर्फ महत्त्वाकांक्षा ही नहीं रखते। बल्कि उस दिशा में जुनून के साथ काम भी किया करते हैं। गौरव के साथ भी कुछ ऐसा ही हुआ। कहा जा सकता है कि यह कहावत कभी गौरव जैसे लोगों के लिए ही मशहूर रही होगी। तीन घंटे की नींद निकालने के बाद शाम को लगभग छह सवा छह बजे के आस पास उठते ही आदतन उसने जब अपना एप्पल वाला मोबाइल देखा तो सैकड़ों नोटिफिकेशन आए हुये थे। उनमें से दो जीमेल पर आए मेल के लिए थे। गौरव ने जीमेल खोलकर देखा। पहला मेल बैंक का था। जिसमें इस संकट के समय में भी होम लोन की ई एम आई यथावत चुकता करने के लिए सम्मानित और मूल्यवान ग्राहक के तौर पर गौरव का धन्यवाद ज्ञापित किया गया था। दूसरा मेल इमर्जेंट फोटो जर्नलिस्ट ऑफ द वर्ल्ड कॉन्टेस्ट की आधिकारिक मेल आई.डी. से आया था उसमें लिखा था।–

डियर गौरव

वार्म रिगार्ड्स एंड मैनी कान्ग्रेचुलेशन्स!

ऑन बिहाफ ऑफ द पैनल ऑफ द जजेस फॉर इंटरनेशनल 'इमरजैण्ट फोटो जर्नलिस्ट ऑफ द वर्ल्ड' कॉन्टेस्ट आई फील प्लेजर टू इन्फॉर्म यू देट योअर फोटोग्राफ टाइटल्ड एज 'द आयरनी ऑफ ए माइग्रेंट लेबर इन इंडिया' हैस बीन सलेक्टेड फॉर अवार्ड। द पैनल ऑफ नाइन जजेस अनोनिमसली सलेक्टेड योअर फोटोग्राफ फॉर द फर्स्ट प्राइज ऑफ द कॉन्टेस्ट। एज पर वन ऑफ द मेजर क्राइटेरिया ऑफ द सलेक्शन फॉर अवार्ड्स योअर फोटोग्राफ हैस पोटेंशियल टू होल्ड द अटेन्शन ऑफ द व्यूअर फॉर ए लॉन्ग व्हेन दे सी इट फॉर द फर्स्ट टाइम। दिस सलेक्शन हैस बीन मेड आउट ऑफ 200 एंट्रीस फ्रॉम अक्रॉस द ग्लोब। अवर कंसर्न्ड रीप्रसेंटेटिव विल कांटैक्ट यू सून फॉर प्रेसेंटिंग योअर ई–सर्टिफिकेट एंड शेयर द प्रोसीजर तो ट्रांसफर अवार्ड मनी ऑनलाइन। वी विश यू फॉर योअर ब्राइट फ्युचर एस ए सिग्निफिकेंट कंट्रीब्यूटर टू द डोमेन ऑफ फोटो जर्नलिज्म।

कोंग्रेचुलेशन्स अगेन।

थैंक्स एंड रिगार्ड्स

मारा

टीम आई ई पी डब्ल्यू सी।

पुष्टि और संतुष्टि के लिए गौरव ने इस मेल को तीन चार बार पढ़ा। जब सुनिश्चित हो गया तो उसकी खुशी का

कोई ठिकाना न रहा। दूसरी मंजिल पर पत्नी और अपने बच्चों को यह खुशखबरी सुनाने के बाद वह सीढ़ियों से उतरकर सीधा पहली मंजिल पर गया जहां उसके माता पिता रहते थे। सबसे पहले उसने माता–पिता के पैर छूकर आशीर्वाद लिया। फिर उन्हें अपनी इस उपलब्धि के वजन के बारे में विस्तार से बताया और वापस दूसरी मंजिल पर चला आया। अपनी पत्नी को चाय बनाने के लिए कहा और अपने डेस्कटॉप के सामने पहिये वाली कुर्सी पर ऐसे जम कर बैठ गया जैसे पुरानी फिल्मों में राजा महाराजा अपने सिंहासनों पर बैठे दिखाई देते थे। अपने प्रति श्रेष्ठता का ऐसा बोध गौरव ने जीवन में आज से पहले कभी महसूस नहीं किया था। किसी भी उपलब्धि की सूचना मिलने पर शरीर में अचानक एक जादुई हलकापन आ जाता है जो उत्साह से भरा होता है। शरीर में ऐसा ही हलकापन गौरव ने भी महसूस किया। वह बेतहाशा खुश था और इस खुशखबरी को फेसबुक पर साझा करने के लिए बेहतरीन से बेहतरीन शब्दों का चुनाव करने लगा। अपनी मित्रता जगत के स्थानीय से ग्लोबल विस्तार को ध्यान में रखते हुये कुछ देर सोचने के बाद उसने अंग्रेजी में लिखा।

डियर फ्रेंड्स

'दिस गिव्स मी इम्मेंस प्लेजर टू शेयर विद यू आल दैट माइ फोटोग्राफ टाइटल्ड एज 'आयरनी ऑफ द माइग्रेंट लेबर इन इंडिया' हैस बीन अवार्डेड विद द प्रेस्टीजियस अवार्ड फॉर इमरजिंग फोटो जर्नलिस्ट ऑफ द वर्ल्ड। द ऑनलाइन कॉन्टेस्ट ऑफ इट्स ऑन काइंड टूक प्लेस टुडे एंड द पैनल ऑफ जजेस अनोनिमसली सलेक्टेड द सेम फॉर फर्स्ट प्राइज। दिस इज टू इस्पेशियली मेंशन हियर देट माई फोटोग्राफ इज सलेक्टेड आउट ऑफ 200 एंट्रीज एंड एज पर वन ऑफ द मेजर क्राइटेरिया माई फोटोग्राफ वाज फाउण्ड विद सब्सटेन्स टू होल्ड द अटेन्शन ऑफ द व्यूअर फॉर ए लॉन्ग व्हेन दे सी इट फॉर द फर्स्ट टाइम। आई सिनसियरली थैंक्स टू गॉड, माई पैरेंट्स, माई फॅमिली, फ्रेंड्स एंड ऑल द वेलविशर्स।

हिन्दी भाषी मित्रों की सुविधा के लिए अँग्रेजी के साथ ही हिन्दी में भी उसने इस स्टेटस को पोस्ट किया था।

लोग तो जैसे इंतजार में ही बैठे थे। गौरव ने जैसे ही स्टेटस अपडेट किया बधाइयों का ऐसा तांता लगना शुरू हुआ जो आधी रात के बाद ही जाकर थमता सा नजर आया। गौरव एक एक को कमेन्ट बॉक्स में रिप्लाई ऑप्शन द्वारा बधाई संदेशों पर बिना चूके आभार व्यक्त करता जा रहा था। इस तरह हरेक रिप्लाई पर कुल जमा कमेन्ट की संख्या बढ़ती जाती थी। आभार व्यक्त करने में हरेक व्यक्ति के कद के हिसाब से उसके शब्दों की संख्या में थोड़ा बहुत विचलन जरूर था मगर उपेक्षा नहीं थी। हर दूसरे मिनट में फोन आ रहे थे सो अलग। गौरव हर एक कॉल उठाकर अपने अखबार के प्रधान संपादक की तरह पहिये वाली कुर्सी पर बैठे बैठे ही घूम–घूम कर विनम्रता के साथ बधाई के प्रत्युत्तर में सबका आभार प्रकट कर रहा था। उसके आभार प्रकट करने की शैली से लग रहा था मानो बधाई देने वाले व्यक्तियों की दुआ से ही उसे यह पुरस्कार हासिल हुआ है।

इस बीच आज बेटे को अवार्ड मिलने की खुशी में उसकी माँ ने गौरव की पत्नी और उसकी बेटी की मदद से खीर और मालपुए बना लिए थे। फेसबुक और फोन से थोड़ा सा समय चुराकर उसने अपने पूरे परिवार के साथ डिनर किया और फिर डेस्कटॉप के सामने बैठ गया। गौरव के माता–पिता रामायण, बच्चे कार्टून नेटवर्क और बीवी क्राइम पेट्रोल देखकर अपने अपने कमरों में कब के सो गए थे। मगर गौरव डेस्कटॉप पर आँखें गड़ाए अपनी पहिये वाली कुर्सी पर जम कर बैठा रहा। रात एक बजे करीब जब बधाइयों की फ्रीक्वेन्सी कम हो गयी तो गौरव ने सोचा अब सो लिया जाय। साइन आउट के वक्त सोने से ऐन पहले गौरव ने अपनी इस पोस्ट को ऊपर से नीचे तक एक बार फिर स्क्रोल कर के देखा। तब तक उसके खाते में 2217 लाइक, 791 लव और 200 वाऊ वाले ईमोजी के साथ 1718 कमेन्ट जमा हो चुके थे। 30 लोगों ने तो इसे शेयर भी किया था। गौरव को इतना नशा तो कभी प्रेस क्लब में व्हिस्की के तीन पैग लगाने के बाद भी नहीं हुआ था। जितना आज इस उपलब्धि पर बिना किसी नशीली वस्तु के सेवन के हुआ था।

हर रोज की तरह उस दिन भी सुबह हुई। गौरव अक्सर सुबह छह बजे उठ जाया करता था। मगर आज लगभग साढ़े सात बजे उठा था। जब वह उठा तो उसकी बेड टी और अखबार वहीं डबल बेड के बगल में रखी स्टूल पर पहले से रखे थे। रात की खुमारी और उत्साह गौरव एस० में अब भी बाकी थी। जिसे शायद अभी हफ्तों और रहना था। चाय की पहली चुस्की लेकर, अखबार के मुख पृष्ठ पर अपने द्वारा आज की तस्वीर श्रृंखला में छपने के लिए भेजी गयी कुत्ते वाली तस्वीर को देखने के लिए जैसे

ही उसने अखबार का मुख पृष्ठ खोला – तो उसके होश उड़ गए। उसकी सारी खुमारी उड़ कर कहीं चली गयी। ठीक वैसे ही जैसे हाथों की सफाई के लिए काम में लाये जाने वाले सेनिटाइजर की तरलता कहाँ गायब हो जाती है, कुछ पता ही नहीं चलता। आज अखबार में 'आज की तस्वीर श्रृंखला' के लिए गौरव द्वारा भेजी गयी 'आज की तस्वीर' नहीं छपी थी। क्योंकि इस तस्वीर का स्थान देर रात महाराष्ट्र–मध्यप्रदेश हाइवे पर घटी एक दुर्दांत घटना की फुल पेज रिपोर्ट ने खा लिया था।

इस फुल पेज रिपोर्ट का सार यह था कि 'कोरोना वायरस से दिनों दिन बढ़ते संक्रमण के कारण घोषित लॉकडाउन 3.0 के बीच सरकारों द्वारा प्रवासी मजदूरों को उनके घरों तक पहुंचाने के तमाम पुख्ता इंतजाम के बावजूद लोग पैदल या फिर खतरा मोल लेकर अपने अपने घरों की ओर रुख कर रहे थे। प्रत्यक्षदर्शियों के अनुसार, बीती देर रात लगभग दो बजे महाराष्ट्र–मध्यप्रदेश हाइवे पर सड़क पार करते वक्त सोलह मजदूरों के एक समूह को तेजी से हाइवे पर चले आ रहे एक ट्रक ने बेरहमी से कुचल दिया था। और लगभग पाँच सौ मीटर तक घसीटता हुआ ले गया था। प्रशासन के मुताबिक यह सभी प्रवासी मजदूर मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ़ और झारखंड के रहने वाले थे और ये अपने घरों को पैदल ही लौट रहे थे। ट्रक की चपेट में आने से मौका ए वारदात पर ही सभी की मौत हो चुकी थी। फुल पेज की इस रिपोर्ट में सबसे नीचे ऐसी ही एक दो खबरें और भी थी जो बिहार, दिल्ली और पंजाब से भी थी।

रिपोर्ट के नीचे तीन तस्वीरें भी थी। पहली तस्वीर जो मौका–ए–वारदात से आई थी उसमें दिख रहा था कि कैसे राहत कार्य जारी है। दूसरी, सड़क पर बिखरी हुई रोटियों की थी और तीसरी तस्वीर एक स्थानीय शासकीय अस्पताल की मोर्चरी से थी। जिसमें बिना किसी कपड़े में लिपटी सोलह लाशें दिख रही थी। सनसनी को फैलने से बचाने के लिए अखबार ने संवेदनशीलता दिखाते हुये लाशों के चेहरों को ब्लर तो कर दिया था मगर सभी लाशों के धड़ दोनों हाथ से लेकर पैरों के नाखून तक साफ साफ दिखाई दे रहे थे।

गौरव एस० की नजर तीसरी तस्वीर पर यकायक ठहर गयी थी। उसे एक पल को ऐसा लगा। जैसे इनमें से एक लाश के हाथों को उसने कहीं देखा है। उसने उस तीसरी तस्वीर को फिर से देखा। एक लाश के दायें हाथ पर का गोदना गुदा था और उसके नीचे नीले हरे रंग में लिखा था बिसन–पन्ना। रिपोर्ट के नीचे मृतकों की सूची थी जिसमें बिसन पन्ना के अलावा तीन और नाम ऐसे थे जिन के आगे पन्ना लिखा था।

गौरव का दिल तेजी से ऐसे धडक रहा था। मानो फट कर बाहर गिर जाना चाहता हो। वह रोना चाहता था मगर पत्रकारिता और जन संचार की शिक्षा दीक्षा में यथार्थ से वस्तुपरक दूरी बनाए रखने के सिद्धान्त का बौद्धिक प्रशिक्षण उसके आंसुओं के सैलाब को पानी के बांध पर पानी के बहाव को रोकने के लिए लगे लोहे के मोटे–मोटे फाटक की तरह मुस्तैदी से रोक रहा था।

(लेखक अज़ीम प्रेमजी फाउंडेशन जयपुर से जुड़े हैं)

नई खेती

-रमाशंकर यादव 'विद्रोही'

मैं किसान हूँ
आसमान में धान बो रहा हूँ
कुछ लोग कह रहे हैं
कि पगले! आसमान में धान नहीं जमा करता
मैं कहता हूँ पगले!
अगर ज़मीन पर भगवान जम सकता है
तो आसमान में धान भी जम सकता है
और अब तो दोनों में से कोई एक होकर रहेगा
या तो ज़मीन से भगवान उखड़ेगा
या आसमान में धान जमेगा।